JAGANNATH SINGH COLLEGE
Affiliated to Assam University, Silchar
P.O. Udharbond
CACHAR, ASSAM-788030

Phone & Fax: 03841-295596
Email:jagannathsinghcollege@gmail.com
Web: www.jagannathsinghcollege.ac.in

3.3.1 Number of research papers published per teacher in the Journals notified on UGC Care during the last five years

Academic Year	Title of Paper	Name of the Author (s)	Department of the teacher	Name of Journal	Year of Publication	ISSN Number	Link to the recognition in UGC enlisted of the journal /Digital Object Identifier		
							Link to website of the journal	Link to article/paper/Abstract of the article	Is it UGC CARE listed
2020-2021	Kabir Ke Kavya Mein Loktatwa	Dr. Santosh Kumar Chaturvedi	Hindi	Shodh Dhara	2021	09753664	www.shodhdhara.com	n/a	Yes
2021-2022	Samkaleen Hindi Sahitya Mein Bharat Bodh Visheshtha: Raghuvir Sahay Ki Kavita 'Camere Mein Band Apahij Ke Sandarbh Mein'	Dr. Santosh Kumar Chaturvedi	Hindi	Dwibhashi Rastra Sewak	2022	2321-4945	n/a	n/a	Yes

Principal
Jagannath Singh College
Udharbond, Cachar.

3.3.1 Number of research papers published per teacher in the Journals notified on UGC Care during the last five years

2021-2022

Faculty Name: Dr. Santosh Kumar Chaturvedi

Academic Year	Title of Paper	Name of the Author (s)	Department of the teacher	Name of Journal	Year of Publication	ISSN Number	Link to the recognition in UGC enlisted of the journal /Digital Object Identifier		
							Link to website of the journal	Link to article/paper/Abstract of the article	Is it UGC CARE listed
2021-2022	Samkaleen Hindi Sahitya Mein Bharat Bodh Visheshtha: Raghuvir Sahay Ki Kavita 'Camere Mein Band Apahij Ke Sandarbh Mein'	Dr. Santosh Kumar Chaturvedi	Hindi	Dwibhashi Rastra Sewak	2022	2321-4945	n/a	n/a	Yes

Principai
Jagannath Singh College
Udharbond, Cachar.

ISSN 2321-4945

UGC CARE LIST approved Research Journal

द्विभाषी राष्ट्रसेवक

वर्ष : 72 ● अंक : 1 ● अप्रैल : 2022

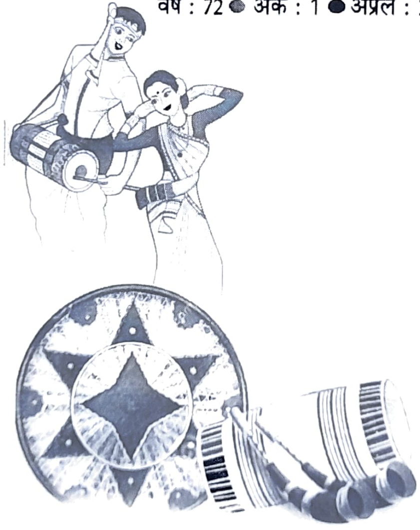

Principal
Jagannath Singh College
Udharbond, Cachar.

अनुक्रम

हिंदी विभाग

- संपादकीय — 5
- गाँधी जी का सत्यानुसंधान — ✍ डॉ. ऋता दीक्षित — 7
- कीर्तन घोषा और सूरसागर के गोपी-उद्धव संवाद का तुलनात्मक अध्ययन — ✍ डॉ. जयश्री कार्कीत — 11
- समकालीन हिंदी साहित्य में भारतबोध विशेषत: रघुवीर सहाय की कविता 'कैमरे में बंद अपाहिज' के संदर्भ में — ✍ डॉ. संतोष कुमार चतुर्वेदी — 15
- समकालीन हिंदी कविता और धूमिल — ✍ सत्यवंत यादव — 19
- बौद्ध धर्म का क्रमिक विकास : बुद्ध, बौद्ध एवं नवबौद्ध — ✍ डॉ. संजय यादव — 23
- असमीया उपन्यास की पृष्ठभूमि — ✍ स्मिता रजक — 27
- विचित्र नाटक में युद्ध वर्णन एवं ऐतिहासिकता — ✍ डॉ. ज्योति कौर — 31
- जलछवि : स्त्री जीवन की एक यथार्थ दस्तावेज — ✍ सिराजुल हक — 38
- यह मुलक हमारा भी है क्या : तस्वीरन — ✍ सन्देह पाण्डेय — 43
- महात्मा गाँधी के पूर्वज : एक प्रामाणिक अध्ययन — ✍ सूर्य प्रकाश — 48
- कहानी कफन — ✍ प्रेमचंद — 53

অসমীয়া বিভাগ

- চেতনা স্ৰোতৰ আলোকত ভূপেন্দ্ৰ নাৰায়ণ ভট্টাচাৰ্যৰ গল্প — ✍ ড° [illegible] গগৈ, ✍ শ্ৰী [illegible] শইকীয়া — 59
- [illegible] শিশু সাহিত্য — ✍ [illegible] দাস — 73
- [illegible] প্ৰথম [illegible] প্ৰাক [illegible] : এক অধ্যয়ন — ✍ [illegible] — 77
- অনুৰাগ আৰু এটা [illegible] (কবিতা) — ✍ [illegible] শইকীয়া — [illegible]

Principal
Jagannath Singh College
Udharbond, Cachar.

अवलोकन

समकालीन हिंदी साहित्य में भारतबोध

विशेषतः रघुवीर सहाय की कविता 'कैमरे में बंद अपाहिज' के संदर्भ में

✍ डॉ. संतोष कुमार चतुर्वेदी

शोध सार :

भारतबोध क्या है? इस विषय पर विचार करने पर इसका सीधा सा अर्थ है- मानव चेतना तथा भाईचारे की भावना उत्पन्न करना। जहाँ संवेदना, सहिष्णुता, प्रेम, सद्भाव, भाईचारा हो, समाज के निराश्रित, लाचार और दबे-कुचले वर्ग के हित-साधना की चिंता हो। किसी दिव्यांग या अपाहिज का व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए उपयोग करना और उसके आँसू बेचकर धनोपार्जन और मनोरंजन करना भारतबोध नहीं है। यही कारण है कि कवि की पूर्ण सहानुभूति उस चरित्र के प्रति है, जो कैमरे के सामने बैठकर बाजारवाद का शिकार बन रहा था और उसकी वेदना बेची जा रही थी।

बीज शब्द : समकालीनता की अवधारणा, भारतबोध, लघु मानव की स्थिति, रघुवीर सहाय की कविता में 'पर दुख कातरता'।

साहित्य के संदर्भ में समकालीनता के दो अर्थ लिए जा सकते हैं- पहला, समसामयिक अर्थात् जो साहित्य विशेष हमारे समय में संबोधित है और दूसरा, प्रासंगिक, जिसका अर्थ है- प्रासंगिक जीवन बोध, यानी कई अर्थों में देखा जाए तो कबीर का साहित्य आज भी प्रासंगिक है, परंतु वह समसामयिक नहीं है। दूसरी ओर यदि समकालीन साहित्य के उद्भव के कारणों और प्रवृत्ति पर गौर करें तो 'समकालीनता' जीवन-जगत को देखने और परखने वाली दृष्टि है, जिसके मूल में प्रतिरोध को लक्षित किया जा सकता है। यहाँ समकालीनता का अर्थ है- अपने काल की मूल विसंगतियों का अवलोकन करना तथा उसके प्रति वास्तविक प्रतिरोध को साहित्य के माध्यम से व्यक्त करना है।

समकालीनता की पृष्ठभूमि का अवलोकन करने पर सन 1962 में चीन और भारत के बीच हुई लड़ाई ने प्रेम, अहिंसा, मित्रता पर [illegible] प्रहार किया, नेहरू की पंचशील की अवधारणा भी असफल रही। सन 1964 में जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु ने भारतीय जन मानस में बची हुई आशा को एक तरह से समाप्त कर दिया। सन 1965 और 1971 में हुआ भारत-पाकिस्तान युद्ध हो या आपातकाल का दौर- इसके कुप्रभाव ने पहले से जर्जर भारतीय अर्थव्यवस्था को मृत प्राय कर दिया। सन 1982 में जनवादी लेखक संघ की स्थापना हुई, दूसरी ओर सन 1984 में भोपाल गैस त्रासदी में असंख्य लोग मारे गए और विकलांग भी हुए। यही वह दौर था, जब उपनिवेशवादी शक्तियों ने जोर पकड़ा। दूसरी ओर नब्बे का दशक आते-आते भूमंडलीकरण के साथ उदारीकरण का आगमन हुआ, जिसने मुक्त बाजार का पथ तैयार किया।

उपर्युक्त सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिवर्तन का व्यापक प्रभाव समकालीन साहित्य पर भी पड़ा और

Principal
Jagannath Singh College
Udharbond, Cachar.

3.3.1 Number of research papers published per teacher in the Journals notified on UGC Care during the last five years

2020-2021

Faculty Name: Dr. Santosh Kumar Chaturvedi

Academic Year	Title of Paper	Name of the Author (s)	Department of the teacher	Name of Journal	Year of Publication	ISSN Number	Link to the recognition in UGC enlisted of the journal /Digital Object Identifier		
							Link to website of the journal	Link to article/paper/Abstract of the article	Is it UGC CARE listed
2020-2021	Kabir Ke Kavya Mein Loktatwa	Dr. Santosh Kumar Chaturvedi	Hindi	Shodh Dhara	2021	09753664	www.shodhdhara.com	n/a	yES

Principai
Jagannath Singh College
Udharbond, Cachar.

ISSN : 0975-3664
RNI : U.P.BIL/2012/43696

शोध धारा
SHODH DHARA

कला और मानविकी का त्रैमासिक, पीयर रीव्यूड, रेफर्ड एवं यू.जी.सी. केयर लिस्टेड, शोध जर्नल

[A Quarterly Peer Reviewed, Reffered, UGC Care Listed, Bi-lingual (Hindi & English) Research Journal of Arts & Humanities]

Year : 2021 **Month : June** **Vol. 2**

प्रधान संपादक
Chief Editor
डॉ0नन (श्रीमती) नीलम मुकेश
Dr. (Smt.) Neelamn Mukesh

61

संपादक
Editor
डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय
Dr. Rajesh Chandra Pandey

प्रकाशक : शैक्षिक एवं अनुसंधान संस्थान, उरई (जालौन), उ0प्र0
Published by : Shaikshik Avam Anusandhan Sansthan, Orai (Jalaun) U.P.

Principal
Jagannath Singh College
Udharbond, Cachar.

ISSN : 0975-3664

RNI : U.P.BIL/2012/43696

शोध धारा
SHODH-DHARA

कला और मानविकी का त्रैमासिक, पीयर रिव्यूड, रेफर्ड एवं यू.जी.सी. केयर लिस्टेड शोध जर्नल (साहित्य, कला और संस्कृति पर केंद्रित)

(A quarterly peer reviewed, referred, U.G.C. care listed reseach journal of Art & Humanities)

Year 2021 June Vol. 2

अनुक्रम Contents

शीर्षक	लेखक	पृ०सं०
शोध आलेख		
हिन्दी साहित्य		**1-124**
१ मनोहर श्याम जोशी और उनका शिल्पगत प्रयोग 'कुरु कुरु स्वाहा'	डॉ० सोफिया राजन	1- 8
२ समकालीन हिंदी कविता में 'तृतीयलिंगी' विमर्श	हर्षिता द्विवेदी	9-17
३ अंतर्वंशी उपन्यास प्रवासी जीवन संघर्ष और स्त्री चेतना का दस्तावेज	डॉ० योग्यता भार्गव	18-24
४ कबीर के काव्य में लोक तत्व	डॉ० संतोष कुमार चतुर्वेदी	25-28
५ भारतीयता की अवधारणा और फणीश्वर नाथ रेणु के उपन्यास	डॉ० बलजीत कुमार श्रीवास्तव	29-34
६ मानवीय संवेदना और विज्ञापन	प्रतिभा डॉ० मुदिता चन्द्रा	35-41
७ आदिवासी समाज में राजनैतिक शोषण की समस्या और हिन्दी उपन्यास	डॉ० उमेश कुमार पाण्डेय	42-46
८ हिन्दी पत्रकारिता में सम्पादकत्व के विविध आयाम : तत्कालीन और वर्तमान चुनौतियों के संदर्भ में	डॉ० राम प्रवेश राय	47-53
९ निराला जी के उपन्यासों की शिल्प संवेदना	निशा यादव डॉ० सुनील विक्रम सिंह	54-57
१० सुखदा एक महत्वाकांक्षिणी नारी की आत्मकथा	डॉ० वसुधरा उपाध्याय	58-64
११ सुभाष शर्मा की कहानियों में सामाजिक यथार्थ	डॉ० शशिकांत मिश्र	66-71
१२ प्रेमचंद की रामलीला कहानी रामकथा के संदर्भ में	डॉ० अनिल कुमार	72-75
१३ पूंजीवादी उपभोक्तावादी संस्कृति और स्त्री	दिनेश कुमार पाल	76-82
१४ राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों में भाषा का स्वरूप	सत्य प्रकाश पाण्डेय	83-89
१५ जगदीश गुप्त के प्रबंध काव्य रचनाओं का आलोचनात्मक अध्ययन	संजय कुमार सोनकर	90-98
१६ प्रेमचंद की कहानियों में दाम्पत्य जीवन	श्रीमती मीरा मुंडा डॉ० मुदिता चन्द्रा	99-106

Principal
Jagannath Singh College
Udharbond, Cachar.

हिन्दी साहित्य

ISSN : 0975-3664, RNI : UPBIL/2012 43686
SHODH-DHARA , Jun 2021, Vol. 2, P 25-28

कबीर के काव्य में लोक तत्व

डॉ० संतोष कुमार चतुर्वेदी

असिस्टेंट प्रोफेसर, जगन्नाथ सिंह महाविद्यालय, काछार, असम

(प्राप्त : 2 मार्च 2021)

Abstract

संत कबीर दास का नाम लोक–चेतना के शीर्षस्थ कवियों में आता है। उन्होंने अपनी वाणी के द्वारा लोक जीवन में प्रचलित विविध पहलुओं का स्पर्श किया है और उन्हें जीवंत रूप दिया है। कबीर का संबंध लोक जीवन के तृणमूल स्तर से था। उन्होंने जो कुछ भी कहा है वह स्वानुभूत एवं लोकानुभूत है। इसीलिए उनकी वाणी में शास्त्रीय मत के स्थान पर लोकमत को महत्व मिला है।

Figure : 00 References : 10 Table : 00

Key Words : कबीर का लोक जीवन, लोक तत्वों का समावेश, लौकिक परंपरा का संदर्भ और कबीर का काव्य

संत कबीर का जन्म सत्य के प्रकाश से असत्य को मिटाकर लोक जनमानस के हृदय में प्रेम, एकता, समता और ज्ञान को स्थापित करने के उद्देश्य से हुआ था। लेकिन उनके जन्म संबंधी तथ्य ही आज तक अस्पष्ट है। कबीर के जन्म से जुड़ी हुई एक किंवदंति प्रचलित है कि एक तालाब के समीप नीरू नामक जुलाहे और उसकी पत्नी नीमा को एक नवजात बालक मिलता है, जिसका काजी ने कबीर नाम रखा, इस नाम का अरबी भाषा में अर्थ है–महान आत्मा। कबीर से संबंधित अन्तः साक्ष्यों से यह सिद्ध होता है कि– "उनका पालन–पोषण एक कपड़ा बुनने वाले जुलाहा वंश में हुआ था, जबकि अन्यत्र उन्होंने स्वयं को कोरी भी कहा है।"[1] अतः देखा जाय तो जुलाहा इस्लाम धर्मावलंबी होते हैं और 'कोरी' हिन्दू, लेकिन दोनों का व्यवसाय कपड़ा बुनना ही है। अतः जुलाहा जाति और व्यवसाय के लिए कबीर दलित वर्ग से जुड़े हुए थे। उनका यह जुड़ाव लोकजीवन के तृणमूल स्तर से था। कबीर के माता–पिता मुसलमान थे, जिसकी वजह से स्वामी रामानन्द का शिष्यत्व इन्हें प्राप्त नहीं हो सका और उनके मार्ग में लेटकर हठ करने के लिए कबीर को स्वामी रामानन्द का शिष्यत्व इन्हें प्राप्त नहीं हो सका और उनके मार्ग में लेटकर हठ करने के लिए कबीर को स्वामी रामानन्द के खड़ाऊँ प्रहार को भी सहना पड़ा और खड़ाऊँ प्रहार पर रामानंद के मुख से निकले 'हाय राम' को गुरु मंत्र और स्वामी जी को अपना गुरु मानकर कबीर को संतोष करना पड़ा। कबीर का बाहरी और पारिवारिक जीवन संघर्ष से भरा हुआ था "माता उनको बात–बात पर कोसा करती थी तो पत्नी कटु वाणी सुनाती थी और पुत्र राम–नाम त्यागकर माला ले आया।"[2] इस तरह से कबीर ने अपने जीवन से संघर्ष कर भक्ति रूपी संजीवनी शक्ति को प्राप्त किया था। उन्हें जातिगत असमानता, हिन्दू–मुस्लिम साम्प्रदायिकता, पाखण्ड और आडंबर का कड़े शब्दों में विरोध करना पड़ा, क्योंकि कबीर की जीवन दृष्टि लोकमंगलकारी थी। उन्होंने शास्त्रमत के विरुद्ध लोकमत को श्रेष्ठ माना तथा यथार्थ अनुभव को महत्व दिया।

"तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता आँखिन की देखी।"[3]

क्योंकि कबीर जानते थे कि जाति और वर्ण में विभक्त भारतीय समाज में लोक जागृति शास्त्रीय

Principal
Jagannath Singh College
Udharbond, Cachar.